पर्यटन : विकास की सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ

शोध पत्र-समाजशास्त्र

* डॉ. व्ही. सेनगुप्ता

''छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल''–प्रस्तुत शोधपत्र छ.ग. में पर्यटन के दृष्टिकोण से छ.ग. में स्थित पर्यटन स्थलों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। 1. ऐतिहासिक 2. पुरातात्विक 3. धार्मिक 4. प्राकृतिक 5. राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य प्राणी 6. औद्योगिक केन्द्र (आधुनिक तीर्थ स्थल)

1. ऐतिहासिक स्थल – छत्तीसगढ़ में अनेक संस्कृतियाँ पल्लवित एवं पुष्पित हुई, जिनमें मौर्य, सातवाहन, वाकाटक, गुप्तवंश, राजर्षि तुल्य कुल, नलवंश, शरभपुरीय, पाण्डुवंश, सोमवंशी, नागवंशी, माण्डलिक एवं कल्चुरि (हैहयवंशी) राजवंश उल्लेखनीय है। इन्हीं राजवंशों की ऐतिहासिक धरोहरें आज भी यहाँ के रतनपुर, लाफागढ़, कोसगईगढ़, करगीखुर्द (कोटा) मदनपुरगढ़ (चाम्पा), सक्ती, रायगढ़, सारांगढ़, जशपुर, रामगढ़, कुदरगढ़, रायपुर, चम्पारन, फिंगेश्वर गढ़, रींवा (लोरिक नगर), धमतरी, गढ़ फुलझर, दुर्ग, सोरढ़, धमधा, मालागढ़ी, गढ़ अकलवारा,, खैरागढ़, घटियारी, भोरमदेव, जगदलपुर, कांकेर आदि स्थानों पर स्थित हैं, तथा पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

2. पुरातात्विक स्थल– पुरातात्विक दृष्टिकोण से छत्तीसगढ़ का काफी महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पाषाण कालीन युग से लेकर लौह युग तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहाँ के प्रमुख पुरातात्विक स्थल हैं– मल्हार, तालागाँव, पाली, तुम्हाण, गनियारी, धनपुर, जाँजगीर, अड़भार, सरगांव, देवकिरारी, कबरा पहाड़, सिंघनपुर, पुजारीपाली, डीपाडीह, हर्राटोला, देवगढ़, महेशपुर, लक्ष्मणगढ़, बेलसर, कोटाडोल, घाघरा, हरचौका, मुरेरगढ़, नारायणपुर, धोबानी, देवकूट, दुर्ग, देव बालौदा, सोरढ़, धमधा, सरदा, नवागढ़, गुरूर, घटियारी, भोरमदेव, अम्बागढ़ चौकी, बारसूर, नारायणपाल, भोंगापाल, वस्तर, समलूर, भैरवगझढ़, छिंदगाँव, कुरूसपाल, छोटे डोंगर, केशरपाल, पोषणपल्ली, गढ़ घनोरा आदि।

3. धार्मिक स्थल – प्राचीन काल से छत्तीसगढ़ धार्मिक आस्थाओं का केन्द्र रहा है। यहाँ शैव धर्म, वैष्णव धर्म तथा बौद्ध धर्म का समन्वय रहा है। इसी कारण यहाँ इन सभी धर्मो से संबंधित अनेक स्मारकों के अवशेष संरक्षित है। छत्तीसगढ़ शैव धर्म प्रधान होने के कारण यहाँ शैव मंदिरों की अधिकता है। वैसे यहां के बौद्ध विहार भी उल्लेखनीय हैं। छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक स्थल हैं–रतनपुर, खरौद, शिवरीनारायण, लुतरा शरीफ, बेलगहना, लोरमी, बेलपान, परसाही, पीथपुर, डभरा, अमरकण्टक, करगीरोड (कोटा) , रायगढ़, पत्थलगांव, कुनकुरी, अंबिकापुर, कुदरगढ़, देवगढ़, राजिम, पंचकोशी, आरंग, सिरपुर, तुरतुरिया, खल्लीरी, पलारी, ओड़कानन, सिहावा, देवरबीजा, बालोद, डोंगरगढ़, गंडई, जगदपुर, दंतेवाड़ा आदि।

4. प्राकृतिक स्थल– छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक संरचना अद्वितीय है। तीन ओर से स्वागत करती पर्वत श्रेणिया, महानदी, शिवनाथ, हसदो, इन्द्रावती एवं खारून नदियों से सिंचित, हरे–भरे वृक्षों से आच्छादित, यह प्रदेश अति स्वास्थ्य लाभप्रद जलवायु का द्योतक है। केन्दई जलप्रपात, खूंटाघाट, बांगो जलाशय, अमरकण्टक, दमऊ दहरा, बगीचा, रानीदाह, गहिरा गुरू की गुफा, मैनपाट, तातापानी, रक्सगण्डा जलप्रपात, अमृतधारा प्रपात, कोठली जल प्रपात, गंगरेल जलाशय, सिहावा, तांदुला जलाशय, खरखरा बाँध, केशकाल, पंचवटी, बैलाडीला, कुटुमसर, चित्रकोट प्रपात, तीरथगढ़ प्रपात, जीवोद्यान, माचकोट, कांगेरधाम एवं कुंआरा सौंदर्य परेवाबाड़ी, भैंसादरहा, मनोरम स्थल, देवगिरी गुफा, कैलाश गुफा, हाथी दहरा, रानी दरहा, पेद्दामादूर, खुशैल वैली आदि छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक सौंदर्य स्थल है।

5. राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य प्राणी अभ्यारण्य – छत्तीसगढ़ के वनों में सैकड़ों की संख्या में चीतल (हिरण), गर्वीले सींगों वाले सांभर, महाकाय गौर (बाईसन) के अलावा वन भैंसे, शेर, तेंदुए, भालू, मोर के अलावा छोटे–बड़े वन्य प्राणी और रंग–बिरंगी चिड़ियों का स्वप्निल संसार रचा बसा है। ऋतुचक कोई भी हो इनका कलरव जंगल को जीवन्तता प्रदान करता है। पपीहे के मधुर पी कहां पी कहां की गुंजायमान ध्वनि, मयूर की केका ध्वनि, कोयल की कूक, कटफोड़वे की ठक–ठक, रोबिन बुलबुल, भृंगराज का गायन, बोझिल मन पर्यटक को भी प्रकृति के साथ जोड़ने के लिये सक्षम हैं। छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य प्राणी अभ्यारण्य हैं– कांकेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान, इन्द्रावती राष्ट्रीय उद्यान संजय राष्ट्रीय उद्यान, अचानकमार अभ्यारण्य, बादलखोल अभ्यारण्य, गोंमरडा अभ्यारण्य, सेमरसोत अभ्यारण्य, तमोरपिंगला अभ्यारण्य, भैरमगढ़ अभ्यारण्य, बारनवापारा अभ्यारण्य, सीतानदी अभ्यारण्य, उदयंती अभ्यारण्य एवं पापेड़ अभ्यारण्य।

6. औद्योगिक केन्द्र (आधुनिक तीर्थ स्थल)– औद्योगिक मामले में छत्तीसगढ़ देश के अन्य औद्योगिक क्षेत्रों से टक्कर ले रहा है, यही कारण है कि यहां कई विशाल औद्योगिक केन्द्र स्थापित हो चुके है, जो कि पर्यटकों का ध्यान बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करते है। यहां के प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं– भिलाई इस्पात संयंत्र, कोरबा सुपर थर्मल पावर स्टेशन, भारत एल्यूमीनियम कंपनी लिमिटेड (बालको), बैलाडीला, चिरिमिरी, जिन्दल स्ट्रिप्स लिमिटेड, रेमण्ड सीमेंट फैक्ट्री आदि। इनके अलावा छत्तीसगढ़ के आदिवासी, ग्रामीण जीवन, उनकी संस्कृति, परम्पराएं, त्यौहार, उत्सव आदि अपने आप में विविधता लिए हुए पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। किसी भी क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक है कि वहां पर्यटन आकर्षण के सामर्थ्य मौजूद हो। छत्तीसगढ़ में सभी प्रकार के पर्यटन स्थलों की भरमार है, जो पर्यटकों

*सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, ठाकुर छेदीलाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जाँजगीर

को आकर्षित करने में सक्षम है। अगर छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों में परिवहन, आवास स्थल, भोजन, जलपान, आदि आवश्यक बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करायी जायें तो छत्तीसगढ़ में पर्यटन का विकास काफी तीव्र गति से होगा। क्योंकि छत्तीसगढ़ में अनेक दर्शनीय स्थल ऐसे है जहां मार्ग की सुविधा एवं परिवहन के साधनों का अभाव है, विश्राम हेतु आवास सुविधा तथा भोजन एवं जलपान के लिए होटल, रेस्टोरेंट आदि का अभाव है। किसी भी पर्यटन स्थल के विकास के लिए आवश्यक है कि वहाँ अनिवार्य समस्त प्राथमिक सुविधाएं उपलब्ध हो। छत्तीसगढ़ में कोई छोटे–बडें पर्यटन स्थल स्थित है, मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा यदि यहाँ स्थित पर्यटन स्थलों की ओर ध्यान दिया जाय तो छत्तीसगढ़ में पर्यटन के विकास की काफी संभावनाएं है। पर्यटन विकास में छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थलों का मूल्यांकन–पर्यटन के विकास में ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थलों का महत्व पूर्णयोग दान रहता है। पर्यटक जिज्ञासु प्रवृति का होता है, उसकी लालसा नये स्थलों के भ्रमण करने की रहती है, इसीलिये वह नये–नये पर्यटन स्थलों की तलास करता है। विभिन्न स्थलों का पर्यटन करके ही पर्यटक अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं धर्म से परिचित होता है, यही कारण है कि आज अधिक से अधिक संख्या में लोग पर्यटन की ओर आकर्षित हो रहे है। छत्तीसगढ़ का यह सौभाग्य है कि यहां एक साथ ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थलों की प्रचुरता है, जो बरबस ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है। छत्तीसगढ़ के रतनपुर, लाफागढ़, कोसगइगढ़, करगीखुर्द (कोटा), मदनपुरगढ़ (चांपा), सक्ती, रायगढ़, सारंगढ़, जसपुर, रामगढ़, कुदरगढ़, रायपुर, चम्पारन, फिंगेश्वरगढ़, रीवां (लोरिक नगर), धमतरी, गढ़ फूलझर, दुर्ग, सोरढ़, धमधा, मालागड़ी, गढ़ अकलवारा, खैरागढ़, घटियारी, भोरमदेव, जगदलपुर, कांकेर आदि ऐतिहासिक स्थल बरबस ही पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते है। इन स्थलों के पर्यटन के लिए न सिर्फ क्षेत्रीय बल की देश के अन्य भागों से भी पर्यटक आते है। छत्तीसगढ़ में पुरातत्व सम्पदा का प्रचुर भण्डार है। यहां स्थित पुरातात्विक स्थल पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है, जिन्हें देख पर्यटक को अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं कला का ज्ञान होता है। मल्हार, तालागांव, पाली, तुम्हाण, गनियारी, धनपुर, जाँजगीर, अड़भार, सरगांव, देवकिरारी, कबरा पहाड़, सिंघनपुर, पुजारीपाली, डीपाडीह, हर्राटोला, देवगढ़, महेशपुर, लक्ष्मणगढ़, बेलसर, कोटाडोल, घाघरा, हरचौका, मुरेरगढ़, नरायणपुर, धोबनी, देवकूट, दुर्ग, देवबलौदा, सोरढ़, धमधा सरदा, नवागढ़, गुरूर, घटियारी, भोंरमदेव, अम्बागढ़ चौकी, बारसूर, नारायणपाल, भोंगापाल, बस्तर, समलूर, भैरमगढ़, छिंदगांव, कुरूसपाल, छोटे डोंगर, केशरपाल, पोषणपल्ली, गढ़ घनोरा आदि छत्तीसगढ़ के पुरातात्विक स्थल है, जिनके भ्रमण करने के लिए काफी संख्या में पर्यटक आते है। छत्तीसगढ़ में पर्यटक के विकास में धार्मिक स्थलों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। छत्तीसगढ़ प्राचीनकाल से ही धर्म एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है, अतः यहां विभिन्न धर्मो के मंदिरों की प्रचुरता है, जो लोगों की श्रद्धा एवं आस्थाओं का केन्द्र बने हुए है। रतनपुर, खरौद, शिवरीनारायण, लुतरा–शरीफ, बेलगहना, लोरमी, बेलपान, परसाही, पिथमपुर, डभरा, अमरकण्टक, करगीरोड (कोटा), रायगढ़, पत्थलगांव, कुनकुरी, अंबिकापुर, कुदरगढ़, देवगढ़, राजीम, पंचकोशी, आरंग, सिरपुर, तुरतुरिया, खल्लारी, पलारी, ओड़कानन, सिहावा, देवरबीजा, बालोद, डोंगरगढ़, गंडई, जगदलपुर, दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक स्थल है, जहां दूर–दूर से पर्यटक एवं श्रद्धालु आकर मनोवांछित फल प्राप्त करते है। छत्तीसगढ़ में प्राकृतिक दर्शनीय स्थलों की बहुलता है, जो कि आकर्षक पर्यटन स्थल का रूप धारण कर चुके है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख प्राकृतिक सौंदर्य स्थल है–केन्दई जलप्रपात, खूंटाघाट, बांगो जलाशय, अमरकण्टक, दमऊ दहरा, बगीचा, रानीदाह, गहिरा गुरू की गुफा, मैनपाट, तातापानी, रक्सगण्डा जलप्रपात, अमृतधारा प्रपात, कोठली जल प्रपात, गंगरेल जलाशय, सिहावा, तांदुला जलाशय, खरखरा बाँध, केशकाल, पंचवटी, बैलाडीला, कुटुमसर, चित्रकोट प्रपात, तीरथगढ़ प्रपात, जीवोद्यान, माचकोट, कांगेरधाम एवं कुंआरा सौंदर्य परेवाबाड़ी, भैंसादरहा, मनोरम स्थल, देवगिरी गुफा, कैलाश गुफा, हाथी दहरा, रानी दहरा, पेद्दामादूर, खुशैल वैली आदि। ये स्थल पर्यटकों को आकर्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते है। छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थलों की प्रजुरता है, जो कि हर आयु वर्ग के पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। अगर इन स्थलों की ओर पूर्ण ध्यान दिया जाए तथा परिवहन, आवास, भोजन, जलपान आदि आवश्यक सुविधाएं वहां उपलब्ध करायी जाये तो ये स्थल आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो सकते है। ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक एवं प्राकृतिक स्थलों के कारण छत्तीसगढ़ में पर्यटन विकास की काफी संभावनाएं है। छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

भोरमदेव– वर्धा जिले में स्थित, भोरमदेव छ.ग. का खजुराहों के नाम से प्रसिद्ध है। भोरमदेव मंदिर का निर्माण 1349 ई. में पुणि नागवंशी राजा रामचंद्रदेव ने कराया था। इस मुख्य मंदिर में शिवलिंग स्थापित है। मंदिर की दीवारों पर हाथीं, घोड़े, नटराज, गणेश, मिथुन मूर्तियां बनी है। इन मूर्तियों की सभ्यता खजुराहों की मूर्तियों से है अतः इसे छ.ग. का खजुराहो कहते है। यहां का मड़वा महल तथा छेरका महल भी दर्शनीय है। यहां प्रत्येक वर्ष भोरमदेव उत्सव मनाया जाता है।

सिरपुर– सिरपुर का प्राचीन नाम श्री–पुर था जिसका शाब्दिक अर्थ है समृद्धि की नगरी या प्राचीन शरभपुरीय, पाण्डुवंशी राजाओं की राजध ाानी थी। चीनी यात्री हवेनसांग ने 7वीं शताब्दी में शासक महाशिवगुप्त के काल में सिरपुर की यात्रा की 16वीं–10 शताब्दी के मध्य यह स्थल बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का केन्द्र था। उत्खनन के दौरान दो बौद्ध विहारों के अवशेष प्राप्त हुए है। सिरपुर में देखने योग्य स्मारक है।

लक्ष्मण मंदिर– 100 व र्ा पूर्व पूर्णतः ईटों से निर्मित मंदिर पांडु वंशीय रानी वासटा देवी द्वारा लक्ष्मण मंदिर का निर्माण किया गया। सिरपुर में लक्ष्मण मंदिर के अलावा मंधेश्वर महादेव मंदिर, राममंदिर, आनंदप्रभु कुटीर विहार, स्वास्तिक विहार आदि दर्शनीय स्थल है। वहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर मेला लगता है।

राजिम– ''छत्तीसगढ़ के प्रयाग के नाम से प्रसिद्ध'' महानदी, सोन्दूर नदी तथा पैरीनदी के संगम पर रायपुर जिले में स्थित है। यहां के मंदिरों में विष्णु की मूर्ति है। यहां राजीव लोचन मंदिर प्रमुख है जिसके विमान के शिखर पर द्रविड़ शैली स्पस्ट दिखाई देती है। यह मंदिर सातवीं सदी के मध्य ईटो से निर्मित है जिसके गर्भगृह में काला पत्थर से निर्मित भगवान विष्णु की मूर्ति है। नदीयों के संगम पर बना कुलेश्वर महादेव मंदिर दर्शनीय है, इसके अलावा राजेश्वर मंदिर, दानेश्वर मंदिर,

रामचंद्र मंदिर पंचेश्वर महादेव मंदिर, तेलीन मंदिर प्रसिद्ध है।

चंपारण्य –रायपुर से 60 किलोमीटर दूर स्थित, चंपारण्य वल्लभ संप्रदाय के प्रणेता वल्लभाचार्य का जन्म स्थली है। यह पुष्टिमार्ग के अनुयायियों की धर्मस्थली है। यह वल्लाभाचार्य को समर्पित उनके अनुयायियों द्वारा निर्मित मंदिर के अलावा एक प्राचीन शिवलिंग जो तीन भागों में विभक्त जो प्रसिद्ध है।

गिरौधपुरी– बलौदाबाजार रायपुर के निकट गुरूघासीदास का जन्म स्थल है। यह सतनामी समाज का प्रमुख तीर्थ स्थल है। यहां गुरूघासीदास जी की मूर्ति स्थापित है। कुतुबमीनार से ऊचा जैतरवाम बनाने की प्रक्रिया प्रारंभ है।

खरौद– शिवरीनारायण से लगभग 3 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित इस नगर का प्राचीन नाम इन्द्रपुर था। यहां भगवान लक्ष्मणेश्वर का अद्भूत शिव मंदिर प्रसिद्ध है। कथा के अनुसार श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने इस स्थान पर शिव जी की तपस्या की संभवतः इस लिए इसका नाम लक्षलिंग पड़ा। यहां शिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है।

रतनपुर– बिलासपुर से अंबिकापुर मार्ग पर बिलासपुर से 26 किलोमीटर दूर स्थित धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व का स्थल है जो ''तालाबों का शहर'' के नाम से प्रसिद्ध है। कल्चुरी राजा रतनसेन की राजधानी रतनपुर को छत्तीसगढ़ की प्रथम राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। यहां प्रमुख दर्शनीय प्रतिवर्ष नवरात्र में मेला लगता है।

मल्हार–बिलासपुर जिले में स्थित पुरातात्विक महत्व का स्थल है। यहां भारतवर्ष में स्थित 52 सिद्धशक्ति पीठ में से एक है एक है यहां डिंडेश्वरी देवी की शुद्ध ग्रेनाईट से निर्मित प्रतिमा प्रसिद्ध है। देवरी पातालेश्वर मंदिर चतुर्भुज विष्णु मूर्ति के अलावा शैव तथा जैन प्रतिमाएं दर्शनीय है।

डोंगरगढ़–प्राचीन नाम कामावतीपुरी, राजनांदगांव जिले में मुम्बई–हावड़ा मार्ग पर स्थित डोंगरगढ़ में पहाड़ी के ऊपर मां बमलेश्वरी देवी का बड़ा मंदिर और पहाड़ी के नीचे मां बमलेश्वरी देवी का छोटा मंदिर प्रमुख दर्शनीय स्थल है। यहां प्रज्ञागिरी पहाड़ी पर स्थित 30 फीट ऊंची बौद्ध प्रतिमा दर्शनीय है।

दंतेवाड़ा–दंतेवाड़ा शंकिनी–डंकनी नदियों के संगम पर स्थित है यहां मां दंतेश्वरी का भव्य मंदिर है। जिसका निर्माण काकतीय शासक अन्नमदेव ने कराया था मंदिर परिसर में गणेश, विष्णु नदी की प्राचीन कलात्मक मूर्तियाँ है।

शिवरीनारायण –जाँजगीर–चाँपा जिले में महानदी, शिवनाथ एवं जोंक नदी के संगम पर स्थित है। दंतकथाओं के अनुसार राम शबरी के झूठे बेर इसी स्थान पर खाए थे। नारायण मंदिर यहां का प्रमुख मंदिर है जहां प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि पर मेला लगता है।

आरंग–रायपुर से सम्बलपुर जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 6 पर स्थित है। ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के अनेक मंदिर होने के कारण मंदिरों का नगर कहा जाता है। आरंग का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। यहां का मांडदेवल मंदिर 12 वीं ताब्दी में निर्मित है जिसमें जैन तीर्थकरो नेमीनाथ और अजीतनाथ की मूर्तियां है। आरंग में बाघदेवल मंदिर, हरदेवलाल मंदिर, पंचमुखी मंदिर, हनुमान मंदिर दर्शनीय है।

कौशल्या मंदिर चंदखुरी–भगवान राम की माता कौशल्या के पिता भानुयंत दक्षिण कौशल्य के राजा थे, उनके राज्य में चंदखुरी क्षेत्र शामिल था यहां कौशल्या माता का मंदिर है। रामायण युग के वैद्य सुशेण यहां के मूल निवासी थे।

मैनपाट–छत्तीसगढ़ का शिमला, सरगुजा जिले में स्थित 3500 मीटर ऊपर स्थित, दो बड़े बौद्ध मठ दर्शनीय है। यहां तिब्बती शरणार्थी निवास करते है। ऊन एवं चमड़े के समान हेतु प्रसिद्ध है।

बारसूर–बस्तर जिले में छिन्दक, नागवंशीय, राजाओं की राजधानी वाला वह स्थल मंदिर एवं तालाबों हेतु प्रसिद्ध है। यहां मामा–भांजा मंदिर (नागर शैली में निर्मित) बत्तीसा मंदिर, चंद्रादित्य मंदिर, गणेश जी की विशाल प्रतिमा दर्शनीय है। यहां की मूर्तियां और मंदिर नागयुग की मूर्ति कला और स्थापत्य कला की श्रेष्ठता का प्रतीक है।

दामाखेड़ा–रायपुर जिले में रायपुर–बिलासपुर मार्ग पर सिमगा से 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह कबीरपंथियों का सबसे बड़ा तीर्थ है। यहां कबीर मठ की स्थापना 1903 में कबीरपंथ के बारहवें वंश गुरू उग्रनाम साहब ने दशहरा के अवसर पर की थी। कबीर आश्रम एवं समाधि यहां का प्रमुख दर्शनीय स्थल है। श्री मुक्तामणी नाम साहब कबीर पंथ के प्रथम वंश गुरू कहलाये।

कुनकुरी का चर्च–रायगढ़–जशपुर राजमार्ग में जशपुर से 45 किलोमीटर पहले स्थित है। एशिया का सबसे बड़ा चर्च, केथोलिक इसाइयों का पवित्र स्थल है।

भीमखोज (खल्लारी)–ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व के इस गांव में पहाड़ी पर माँ खल्लारी का मंदिर स्थित है। महाभारत काल के प्रसंगो से जुड़ी कथाएं इस गांव को महत्व प्रदान करती है। इस पहाड़ी के नीचे लाक्षागृह के अवशेष है जहां दुर्योधन ने पाण्डवों को जलाकर मारने का षड़यंत्र रचा था।

पाली–बिलासपुर–कोरबा मार्ग पर कोरबा जिले में स्थित जिसे 9वीं सदी में प्राचीन बाणवंशीय राजा विक्रमादित्य द्वारा निर्मित शिवमंदिर प्रसिद्ध है।

नागपुर तीर्थ जैन मंदिर–दुर्ग जिले में स्थित नागपुर में जैन तीर्थकरों की भव्य मूर्तियां विराजमान है।

तालागांव–बिलासपुर से लगभग 24 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित है यहां प्राप्त शिव प्रतिमा तथा देवरानी–जेठानी का मंदिर प्रसिद्ध है।

लाफा (चैतुरगढ़)–यह स्थान कोरबा जिले के अंतर्गत पाली से उत्तर की ओर लगभग 20 किलोमीटर दूर पहाड़ी शिखर पर स्थित है यहां महामाया मंदिर, किला का भग्नावेश, तालाब और गुफा शिव दर्शनीय है। गुफा शिवलिंग के संदर्भ में यह जनश्रुति प्रचलित है कि भगवान शंकर ने भस्मासुर का वध इसी गुफा में किया था।

डीपाडीह शिव मंदिर–सरगुजा जिले के सामरी तहसील में स्थित, ऐसी मान्यता है कि यहां भगवान राम का विशाल महल था यहां अनेक प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष है।

राजीव स्मृति वन–यह रायपुर से 12 किलोमीटर दूर 57 एकड़ क्षेत्र में विस्तृत है प्रकृति के संरक्षण, प्रकृति की कार्य प्रणाली में जनचेतना विकसित करने हेतु इसमें ऊर्जा पार्क एवं हर्बल गार्डन का निर्माण भी प्रस्तावित है।

गुफाएँ–रामगिरी / रामगढ़–बिलासपुर अम्बिकापुर मार्ग पर अम्बिकापुर से 40 किलोमीटर दूर स्थित है। रामगिरी विंध्यांचल पर्वत श्रृंखला का

अंग है। कालीदास के महाकाव्य मेघदूत के प्रथम श्लोक में रामगिरी का उल्लेख है। यहां सीताबेंगा गुफा तथा जोगीमारा गुफा प्रसिद्ध है।

सीताबेंगा गुफा—रामगिरी की प्राचीनतम नाट्यशाला सीताबेंगा गुफा में निर्मित है। इस नाट्यशाला में नाटक व नृत्य के लिए प्रस्तर का विशाल मंच है। सीताबेंगा में त्रेतायुग में बनवास के दौरान राम लक्ष्मण, सीता यहां रूके थे जिससे इस गुफा का नाम सीताबेंगा पड़ा।

जोगीमारा गुफा—रामगिरी पर्वत पर सीताबेंगा गुफा के निकट जोगीमारा गुफा स्थित है। इसमें बने यक्ष, किन्नर एवं देवी देवताओं के चित्र अजन्ता गुफाओं के समकालीन है इन गुफाओं में पाली भाषा में शिलालेख भी खुदे है।

कबरा गुफा—रायगढ़ जिले में स्थित है यहां पूर्वपाषाण कालीन मानव द्वारा रंगीन चित्रकारी की गई है। छ.ग. में प्राचीनतम मानव निवास के प्रमाण रायगढ़ के कबरा पहाड़ से प्राप्त हुए है। सिंघनपुर की गुफाएं—रायगढ़ जिले में स्थित है प्राचीनतम मानव निवास के प्रमाण तथा शैल चित्र प्राप्त हुए है।

कुटुमसर गुफा—बस्तर जिले में स्थित कुटुमसर गुफा प्रथम भू—गर्भित गुफा है जिसकी खोज प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता शंकर तिवारी ने की थी। यह देश की सबसे गहरी गुफा है। इस गुफा में छत लटकते चूने के स्तंभ है इन्हें स्टेलेग्माटाइट कहते हैं। यहां चूने की चट्टानों में कार्बन डाईआक्साइड मिश्रित जल बहता है।

प्रमुख जलप्रपात—1. चित्रकूट जलप्रपात—एशिया के नियाग्रा के नाम से प्रसिद्ध इंन्द्रावती नदी पर बस्तर जिले में स्थित छ.ग. का सबसे बड़ा जलप्रपात है। 2. तीरथगढ़ जलप्रपात—मुनगाबहरा नदी पर बस्तर जिले में स्थित है। 3. रक्सगण्डा जलप्रपात— सरगुजा जिले में चलंगी नामक स्थान में रेंड नदी जलप्रपात का निर्माण करती है। 4. अमृतधारा जलप्रपात— हसदो नदी महेन्द्रगढ़ के पास बरहमपुर पहाड़ की ऊंचाई से गिरकर अमृतधारा जलप्रपात बनाती है। इस जलप्रपात का पानी स्वास्थ्यवर्द्धक होने के कारण इसका नाम अमृतधारा जलप्रपात पड़ा। 5. कोठली जलप्रपात— सरगुजा जिले के डीपाडीह के निकट कन्हार नदी कोठली जलप्रपात का निर्माण करती है।

निष्कर्ष—पर्यटन स्थल का रूप वही स्थल रूप धारण कर सकता है, जहाँ की सैर करना पर्यटक पसंद करते है। और पर्यटक हेतु ऐसे पर्यटन स्थल की सैर (भ्रमण) करना अधिक पसंद करते है जहां अधिक पर्यटक सुविधाएं प्राप्त हो। किसी भी स्थल को पर्यटक के रूप में विकसित करने में उस स्थल में विद्यमान पर्यटन की अवस्थापनों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है— 1. आकर्षक स्थल को पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम हो। 2. परिवहन के समुचित साधन (हवाई सेवा, रेल सेवा, बस सेवा टैक्सी सेवा) 3. अच्छे सड़क मार्ग 4. आवास स्थल की सुविधा आदि। छत्तीसगढ़ में पर्यटन स्थलों की भरमार है, जिनमें से कुछ स्थल पर्यटक स्थल के रूप में विकसित हो चुके है, कुछ विकासशील है तथा कुछ स्थल ऐसे है जो पर्यटकों को आकर्षित करने में पूर्ण रूपेण सक्षम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल—लेखक डॉ.टी.डी.शर्मा। 2. Tuteja Tutorials 68-71